INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
July-December 2023, Submitted in August 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

जागृति भक्तिः तुलसीदास का जीवन और कार्य

मंजू लता, शोधार्थी (हिंदी) द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)
डॉ. नवनीता भाटिया, एसोसिएट प्रोफेसर, शोध निर्देशक, ग्लोकल स्कूल ऑफ आर्ट्स – सोशल साइंस, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

अमूर्त

''तुलसीदास'', जन्म रामबोला दुबे के नाम से 1511 में सोरों, दिल्ली सल्तनत (आज के उत्तर प्रदेश, भारत) में हुए, एक प्रसिद्ध वैष्णव हिन्दू संत और कवि थे, जिनकी प्रभु राम के प्रति गहरी भक्ति ने भारतीय साहित्य और धार्मिकता को आकार दिया। उनकी प्रमुख पुस्तक ष्रामचरितमानसष है, जो अवधी में रामायण का पुनर्वर्णन करती है और आध्यात्मिक और साहित्यिक दोनों क्षेत्रों को जोड़ती है, राम की कहानी को सभी के लिए सुलभ बनाती है। तुलसीदास का जीवन, जिसमें दिव्य हस्तक्षेप और आध्यात्मिक प्रकाशन हैं, उनकी रचनात्मकता और धर्म के प्रति अडिगता को पुनः साबित करता है। यह पेपर तुलसीदास की जीवनी, ''रामचरितमानस'' के अलावा उनके साहित्यिक योगदानकृजैसे ष्हनुमान चालीसाष्कृऔर उनके भारतीय संस्कृति और धार्मिक प्रथाओं पर अपना प्रभाव समझाने का प्रयास करता है। विद्वानों के परिप्रेक्ष्य और पारंपरिक जीवनचरित्रों की समीक्षा के माध्यम से इसमें तुलसीदास के हिन्दू संधारणा में उनका प्रभाव और सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में कितने महत्वपूर्ण थे, यह भी जांचा जाता है। उनकी रचनाएँ वैश्विक रूप से सुनसानी बंद करती हैं, भौगोलिक सीमाओं को पार करती हैं और लाखों लोगों की आध्यात्मिक जीवन को समृद्ध करती हैं। तुलसीदास की जीवन और रचनाएँ भक्ति, साहित्यिक प्रतिभा, और दार्शनिक दृष्टिकोण के प्रोफाउंड मिश्रण का प्रतीक हैं, जो हिन्दू साहित्य और आध्यात्मिकता में एक अमर निशान छोड़ते हैं।

कीवर्डः जागृति भक्ति, जीवन और कार्य, तुलसीदास

परिचय

तुलसीदास, जिनका जन्म 11 अगस्त, 1511 को सोरों, दिल्ली सल्तनत (वर्तमान उत्तर प्रदेश, भारत) में रामबोला दुबे के नाम से हुआ था, एक प्रसिद्ध वैष्णव हिन्दू संत और कवि थे। उनकी अद्वितीय भक्ति भगवान राम के प्रति निरंतर थी, जिसने भारतीय साहित्य, आध्यात्मिकता, और संस्कृति पर अविस्मरणीय प्रभाव डाला। तुलसीदास को उनकी महाकाव्य ''रामचरितमानस'' से जाना जाता है, जो संस्कृत रामायण का अवधी भाषा में पुनर्वर्णन करता है।

तुलसीदास ने अपने जीवन के दौरान संस्कृत, अवधी, और ब्रज भाषा में कई महत्वपूर्ण कार्यों की रचना की, जो उनकी गहरी साहित्यिक प्रतिभा और आध्यात्मिक दृष्टि को दर्शाते हैं। उनके योगदान में मुख्य रूप से ''रामचरितमानस'' जैसी अद्वितीय पुस्तक है, जो संस्कृत रामायण का अवधी भाषा में पुनर्वर्णन करती है। उनकी रचनाएँ में शामिल हैं हनुमान चालीसा, जो भगवान हनुमान की प्रशंसा में है, और विनय पत्रिका, गीतावली, और दोहावली जैसी अन्य प्रसिद्ध कृतियाँ भी।

तुलसीदास का आध्यात्मिक सफर उनके गुरु नरहरिदास के मार्गदर्शन में रामानंदी सम्प्रदाय के उपदेशों में गहरी निष्ठा से जुड़ा था। उनकी दार्शनिक दृष्टि, विशिष्टाद्वैत, सभी प्राणियों के दिव्य के साथ एकता को बल देने पर आधारित थी, जो उनकी रचनाओं में स्पष्ट है। उनकी रचनाओं में राम और उनकी पत्नी सीता के प्रति गहरा प्रेम और भक्ति का संदेश प्रकट होता है।

भले ही तुलसीदास अपने जीवन का बहुमूल्य भाग वाराणसी (आधुनिक वाराणसी) और अयोध्या में बिताएं, लेकिन उनका प्रभाव भौगोलिक सीमाओं को पार करता रहा। उन्होंने वाराणसी में संकट मोचन हनुमान मंदिर की स्थापना की, जिसे उनकी हनुमान से दिव्य मुलाकात के स्थान के रूप में माना जाता है। साथ ही, उन्होंने रामलीला नाटकों की परंपरा की शुरुआत की, जो भारतीय सांस्कृतिक उत्सवों का अभिन्न हिस्सा रही हैं, विशेषकर दीपावली के त्योहार के दौरान।

तुलसीदास की साहित्यिक क्षमता और आध्यात्मिक गहराई ने उन्हें हिंदी साहित्य के न केवल बल्कि भारतीय और विश्व साहित्य में महान कवि के रूप में स्वीकृति दिलाई है। उनकी चिरस्थायी विरासत साहित्य के क्षेत्र से परे बढ़ी है, जो भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं में, जैसे कला, संगीत, और धार्मिक प्रथाओं में भी व्याप्त होती है। वाराणसी के गंगा किनारे पर स्थित तुलसी घाट उनकी पूज्य स्थिति का प्रमाण है, जो उनके भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता में योगदान को अमर बनाता हैं।

➢ भक्ति

भक्ति व्यक्ति, देवता, कारण, या गतिविधि के प्रति गहरी और ईमानदारीपूर्ण समर्पण, वफादारी, और उत्साह को कहती है। इसमें एक मजबूत भावनात्मक आसक्ति और प्रतिबद्धता शामिल होती है, जिसे अधिकृत प्रेम, श्रद्धा, और अनवरत समर्थन से चित्रित किया जाता है। भक्ति आमतौर पर ऐसे कार्यों में प्रकट होती है जो व्यक्ति की गहरी प्रतिबद्धता और निष्ठा को दर्शाते हैं, जैसे प्रार्थना, पूजा, सेवा, या त्यागी क्रियाएँ। यह

धार्मिक या आध्यात्मिक प्रकृति की हो सकती है, लेकिन यह सेक्युलर पुरस्कार या व्यक्तिगत संबंधों में भी फैल सकती है, जहां व्यक्तियों ने गहरी समर्पण और उत्साह का प्रदर्शन किया है। भक्ति अक्सर एक आत्मसमर्पण, निःस्वार्थता, और इच्छा का प्रकटीकरण करती है, जो भक्ति के वस्तु के साथ संबंध की इच्छा है, और इस समर्पित पुरस्कार के माध्यम से आत्मसात्विकता और अर्थ की खोज करती है।

भक्ति सामान्यतः किसी देवता, आध्यात्मिक प्रथा, किसी कारण या दूसरे व्यक्ति के प्रति गहरी प्रतिबद्धता, समर्पण या गहरे प्रेम को संकेत करती है। इसमें अक्सर गहरी श्रद्धा, वफादारी और एक उत्कट संबंध की भावना शामिल होती है।

तुलसीदास के जीवन के संदर्भ में, भक्ति एक मुख्य और परिभाषित भूमिका निभाती थी। तुलसीदास ने मुख्य रूप से भगवान राम की ओर भक्ति प्रदर्शित की, जिन्हें उन्होंने केवल एक देवता ही नहीं, बल्कि धर्म के परिपूर्ण दिव्य स्वरूप के रूप में माना। उनकी भक्ति कई तरीकों में प्रकट हुई–

- **साहित्यिक कार्य** तुलसीदास ने रामचरितमानस और हनुमान चालीसा जैसी कई साहित्यिक श्रेष्ठगाथाएँ रचीं, जो उनकी गहरी भक्ति का प्रकटीकरण करती हैं। इन कार्यों में भगवान राम और हनुमान के प्रति उनकी अगाध भक्ति और श्रद्धा का वर्णन होता है। ये न केवल इन देवताओं से जुड़ी कथाएँ और शिक्षाएँ सुनाते हैं, बल्कि पाठकों और अनुयायियों के बीच गहरी भक्ति और श्रद्धा को भी प्रेरित करते हैं।
- **आध्यात्मिक अभ्यास** तुलसीदास केवल एक कवि नहीं थे, बल्कि वे एक गहरे आध्यात्मिक व्यक्ति भी थे जो प्रार्थना, ध्यान और विचार के माध्यम से भक्ति (भक्ति) का अभ्यास करते थे। उनका जीवन दिव्य प्रस्तुति की खोज में समर्पित था और भगवान राम की कथाओं में निहित आध्यात्मिक सत्य को समझने की कोशिश की।
- **व्यक्तिगत उदाहरण** तुलसीदास का जीवन स्वयं अदल–बदल भक्ति का सबूत था। कई चुनौतियों और आलोचनाओं का सामना करने के बावजूद, उन्होंने अपनी दृढ़ता के साथ अवधी भाषा में भगवान राम की शिक्षाएँ और कथाओं को सभी के लिए पहुँचने में अपना समर्थन दिखाया। इससे सिद्ध होता है कि तुलसीदास के जीवन में भक्ति केवल एक भावना या धार्मिक अभ्यास ही नहीं थी, बल्कि यह प्रेम, विश्वास, विनम्रता, और दिव्य सत्य और कृपा की अदल–बदल खोज के एक गहरे आध्यात्मिक यात्रा थी। उनकी भक्ति आज भी कई पीढ़ियों को प्रेरित करती है और समय और स्थान की सीमाओं को पार करती है।

साहित्य की समीक्षा

अल्चिन, एफ.आर. (1966)

हिंदू संप्रदायवाद का इतिहास अक्सर अस्पष्ट होता है। संप्रदाय और असंप्रदाय के बीच का अस्पष्ट संबंध प्रक्रिया को जटिल बना देता है। रेनू कहते हैं– आज तक कोई डेटा उपलब्ध नहीं है, लेकिन हमारे पास वह आधार है कि सबसे सक्रिय संप्रदाय बड़े विशाल श्रद्धालु समूहों के भीतर विशिष्ट समूह होते थे। हालांकि, इतिहास एक दूसरे दृष्टिकोण से समझने में अधिक संगत होता है। पिछले 1,500 वर्षों से संप्रदाय गतिविधि एक एकमात्र प्रमुख भक्ति आंदोलन को फैलाने पर केंद्रित रही है। इस दृष्टिकोण से, वैष्णवीय या शैवीय जैसे संप्रदायों की धार्मिक संगति अच्छी होती है और अक्सर सिद्धांत या विवरण में भिन्नताओं को छिपा देती है। फिर भी, कुछ संतों की कृतियों की लोकप्रियता के कारण क्षेत्रीय भिन्नताओं में योगदान हुआ है। कर्नाटक में, बसवा या पुरंदर दास की पूजा होती है, जबकि महाराष्ट्र में, ज्ञानेश्वर या तुकाराम, पंजाब में नानक, और हिंदी में कबीर, तुलसी, और सूरदास के भक्ति का आधार है। उत्तर भारत में भी कई प्रवाहों जैसे वैष्णवीय, शैवीय, बौद्ध, तांत्रिक, और योगी के प्रभाव में आया है।

लैम्ब, आर. (2022)

एक स्वदेशी धर्म जिसकी प्राचीन जड़ें हैं, हिंदू विचार और अभ्यास में प्राकृतिक पर्यावरण के प्रति हमेशा से गहरी और स्थायी चिंता रही है, भले ही यह आजकल कमजोरी पर हो। कई प्राचीन पाठों और किस्सों में बहुत सी साधनाएँ हैं जिनसे हम प्रेरणा प्राप्त करते हैं और जिनमें हम प्रकृति का सम्मान सीख सकते हैं, और इसमें से एक बहुत अच्छी जगह है तुलसीदास की 'रामचरितमानस' (आमतौर पर श्मानसश के रूप में जाना जाता है), जो आज उत्तर भारत और हिंदू विदेश में सबसे लोकप्रिय ग्रंथ है। लेखक का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट रूप से भगवान के प्रति भक्ति को बढ़ाना था, जिसे सीता और राम के रूप में समझा गया है, लेकिन उन्होंने यह भी चाहा कि पाठक और श्रोताओं को प्राकृतिक दुनिया और प्रकृति को दिव्यता के प्रतिबिंब और परावर्तन के रूप में देखने का दृष्टिकोण मिले। इस अध्याय में हम तुलसीदास, उनकी राम कहानी की दृष्टि, और इस पाठ से हमें क्या सिखने को मिलता है उस पर विचार करेंगे, ताकि हम

आज हमारे प्रकृति के साथ हमारे संबंध, उसके सभी निवासियों के साथ, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से एक–दूसरे के साथ जुड़े समस्याओं का सामना करने में मदद मिले।

शर्मा, एम., कुमारी, एस., और चौधरी, एम.एम. (2022)

गोस्वामी तुलसीदास ने 'राम–कथा' को पुनर्सृजन किया, जिससे वे सबसे प्रसिद्ध हिंदी कवि में शामिल हुए। सामाजिक चर्चा में, तुलसी की प्रसन्नता कभी–कभी एक राम पंडित या भारतीय भक्ति और धर्म को लिया जाता है। मध्ययुगीन लेखकों ने अधिकांशतः तुलसीदास की लोकप्रियता तक नहीं पहुँचा, जो आज भी महत्वपूर्ण है। उनकी प्रसिद्धि उस समय से है जब राम को 'लोक नायक' के रूप में प्रस्तुत किया गया। तुलसी का राम 16वीं और 17वीं सदी के भारत में स्थापित है, जो एकता की भूमि है। 'कलियुग' में, तुलसीदास इस असमान समाज को दर्शाते हैं। गरीबी, भूखमरी, महामारी, स्त्रीवाद, पाखंड, उलटी पृथ्वी, पूर्वापर्णी राजनीति, दुष्ट–श्रेष्ठ, जल–जीव, आदि मौजूद हैं। इस प्रकार की स्थिति में, श्रामश को अनौपचारिक रूप में प्रदर्शित किया गया है और उसे जीवन की कठिनाइयों से जुड़ा है, जहां राम दुष्टों को निगलने के लिए पैदा हुआ था, जो इतिहास में सदैव महत्वपूर्ण रहा है। सांस्कृतिक परस्परक्रिया समाज को प्रभावित करती है। मानव समाज की समृद्धि के लिए, जाति और धर्म की पूर्वाग्रह से पीड़ित, उन्होंने परंपरा के साथ रामायण को अमृत संजीवनी कथा सागर के रूप में राम भक्ति की गंगा को मानव की चेतना में डाला। 'परहित–स्वार्थहीन' कोई और धर्म नहीं है। राम कथा के माध्यम से, उन्होंने जीवन का शिक्षण दिया। तुलसीदास की 'रामचरितमानस' में 'राम' मानव हैं, लेकिन समाज पर अद्वितीय प्रभाव है। भारतीय लोग राम को 'मर्यादा पुरुषोत्तम' के रूप में देखते हैं। वह रूप हमें विश्व समुद्रों को अतिक्रमण करने के सबसे उत्तम तरीके का उपदेश देने की कोशिश करता है। तुलसीदास ने राम को 'परब्रह्म', 'सीतापति', 'भक्त', 'विश्व उद्धारक', 'अनुज स्नेही', 'सखा स्नेही' आदि के रूप में प्रस्तुत किया है, और समाज में असमानता के हीरो के रूप में। उन्होंने 'राम राज्य' के माध्यम से इस प्रयास की।

अध्ययन के उद्देश्य

- तुलसीदास के जीवन के बारे में जीवनीकी विवरण और महत्वपूर्ण घटनाओं की जांच करना, उनके बचपन, आध्यात्मिक अनुभवों, और हिंदू साहित्य में योगदान पर केंद्रित करना।
- तुलसीदास की मुख्य रचनाओं जैसे ष्रामचरितमानस,ष ष्हनुमान चालीसा,ष और अन्यों की जांच करना, उनके विषय, भाषाई नवाचार, और सांस्कृतिक महत्व को उजागर करना।
- तुलसीदास के आध्यात्मिक विकास की चर्चा करना, उनकी दिव्य प्राणियों से मुलाकातें और उनके दार्शनिक दृष्टिकोण को रूपांतरित करने वाली प्रभावित, खासकर रामानंदी सम्प्रदाय में।
- तुलसीदास की रचनाओं के स्थायी प्रभाव का मूल्यांकन करना, भारतीय समाज पर उनके भक्ति को बढ़ावा देने, धार्मिक अभ्यासों को आकार देने, और रामलीला जैसी सांस्कृतिक परंपराओं को प्रोत्साहित करने में उनकी भूमिका के बारे में।

तुलसीदास के जीवन पर उनकी कृतियों के माध्यम से एक झलक

तुलसीदास का जीवन रहस्यमयी है, जिसमें केवल कुछ तथ्य और संकेत ही उनकी रचनाओं में उपलब्ध हैं। नब्हदास और उसकी टिप्पणी भक्तमाल द्वारा तुलसीदास के जीवन पर प्रमुख स्रोत हैं, जो केवल तुलसीदास के समकालीन थे। नभदास, तुलसीदास के समकालीन, उन्हें वाल्मीकि के अवतार के रूप में उपासता थे। प्रियदास, जिन्होंने तुलसीदास की मृत्यु के लगभग सौ वर्ष बाद लिखा, ने इसे और भी विस्तार से वर्णन किया, जिसमें तुलसीदास के जीवन से सात चमत्कारिक अथवा आध्यात्मिक अनुभव शामिल हैं।

1920 के दशक में, दो और प्राचीन जीवनीयाँ सामने आईंरू वेणी माधव दास द्वारा लिखी गई श्मूल गोसाँईं चरितश और दासानीदास (भवानीदास) द्वारा लिखी गई श्गोसाँईं चरितश। वेणी माधव दास, जो तुलसीदास के शिष्य थे, ने तुलसीदास के लिए एक संशोधित जन्म तिथि प्रस्तुत की। दासानीदास की कृति ने प्रियदास की तुलना में और विस्तार से कथनी प्रदान की। इसके अलावा, 1950 के दशक में, कृष्णदत्त मिश्रा की श्गौतम चंद्रिकाश प्रकाशित हुई, जो एक पुराने हस्तलिखित पर आधारित थी। कृष्णदत्त मिश्रा के पिता तुलसीदास के निकट संबंधी थे।

कुछ आधुनिक विद्वान इन बाद में प्रकाशित जीवनीयों की प्रामाणिकता पर सवाल उठाते हैं, जबकि दूसरे इन्हें पूरी तरह से खारिज करने से असंतुष्ट हैं। विभिन्न दृष्टिकोणों के बावजूद, ये पांच काम संयुक्त रूप से तुलसीदास की पारंपरिक जीवनीयों की आधारशिला बनाते हैं, जिन पर आधुनिक जीवनियों की निर्माण की जाती है। ये इस पूज्य संत और कवि के जीवन और आध्यात्मिक अनुभवों के बारे में अनमोल अवलोकन

प्रदान करते हैं, जिससे हमारे तुलसीदास की विरासत और उनके भारतीय साहित्य और आध्यात्मिकता पर प्रभाव के समझ में सहायक होते हैं।

तुलसीदास को व्यापक रूप से माना जाता है कि वे हिंदू पौराणिक कथाओं में महत्वपूर्ण संत वाल्मीकि के पुनर्जन्मित रूप हैं। नभदास की श्भक्तामलश के अनुसार, तुलसीदास को कलियुग में, आध्यात्मिक अवनति के युग में वाल्मीकि के रूप में अवतारित माना जाता है। यह विश्वास खासतौर पर रामानंदी सम्प्रदाय में प्रमुख है, जो इस युग में वाल्मीकि खुद को तुलसीदास के रूप में अवतरित करने का धारण करता है।

पौराणिक कथा के अनुसार, हनुमान, भगवान राम के वफादार शिष्य, बार–बार वाल्मीकि के पास गए थे ताकि वे उनसे रामायण का पाठ सुन सकें, लेकिन वाल्मीकि ने पहले इनकी मंदरा रूप को देखकर इन्हें अयोग्य माना। रावण के पराजय के बाद, हनुमान हिमालय चले गए और वहां अपनी भक्ति जारी रखने के लिए विश्राम किया। वहां, उन्होंने अपनी नाखूनों से चट्टानों पर श्महानाटकश या श्हनुमान नाटकश नामक रामायण का एक नाटकरूप रूपांतर निर्माण किया। जब वाल्मीकि ने इस अद्वितीय कृति को देखा, तो उन्हें यह भय हुआ कि यह उनके रामायण को छानेगा। हनुमान की विनम्रता से प्रभावित होकर, वाल्मीकि ने उन्हें तुलसीदास के रूप में जन्म लेने और रामायण को लोकभाषा में रचना करने का निर्देश दिया। इस प्रकार, तुलसीदास का जीवन और कार्य ऋषि वाल्मीकि से जुड़े आध्यात्मिक वंश और दिव्य उद्देश्य से ओतप्रोत हैं।

तुलसीदास की आस्था की यात्रा और उनका आध्यात्मिक योगदान

तुलसीदास की कवितायीं उन्होंने वाराणसी के पवित्र शहर में शुरू की थी, जहां उन्होंने प्रह्लाद घाट पर संस्कृत में छंदों की रचना करने का प्रारंभ किया था। हालांकि, उनके प्रयासों से प्रतिदिन, आठ दिनों तक, उनके लिखे गए छंद अन्यायपूर्ण रूप से गायब हो जाते थे। आठवें रात को तुलसीदास ने एक दिव्य स्वप्न में एक अद्वितीय अनुभव किया। वाराणसी के काशी विश्वनाथ मंदिर के प्रतिष्ठानीय देवता शिव ने उनके सामक्षिक रूप में पार्वती सहित प्रकट हुए। इस अलौकिक घटना में, शिव ने तुलसीदास को संस्कृत को त्यागकर लोकभाषा में कविता रचना करने के लिए प्रेरित किया। यह दिव्य आदेश सिर्फ एक सुझाव नहीं था बल्कि एक पूर्वज्ञान भी था, क्योंकि शिव ने यह भविष्यवाणी की थी कि तुलसीदास की रचनाएँ महान साम वेद के समान फलनेवाली होंगी।

शिव के दिव्य आदेश के पश्चात, तुलसीदास ने एक परिवर्तनात्मक यात्रा प्रारंभ की, औयोध्या को जाकर अपने साहित्यिक अभियान की शुरुआत की, जिसका परिणामस्वरूप उनकी उपन्यासीय महाकाव्य श्रामचरितमानसश हुआ। इस महान कार्य की रचना की शुरुआत रामनवमी के शुभ अवसर पर हुई, वर्ष 1631 विक्रम संवत (जो 1575 CE के समान है)। दो वर्ष, सात महीने और इक्कीस दिनों के अंतराल में, तुलसीदास ने रामचरितमानस को रचनात्मक रूप से पूर्ण करने के लिए अपनी हर शक्ति और भक्ति समर्पित की। वर्ष 1633 विक्रम संवत (1577 CE) में, हिन्दू साहित्य के इतिहास में महत्वपूर्ण दिन विवाह पंचमी पर, तुलसीदास ने इस महाप्रबंध को पूरा किया, जिसने हिन्दू साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव निर्धारित किया।

''रामचरितमानस'', अवधी भाषा में एक महाकाव्य कविता है, जो 16वीं सदी के भक्ति कवि तुलसीदास (c. 1511–1623) का महाकाव्य है। इसे 'तुलसी रामायण', 'तुलसीकृत रामायण' या सिर्फ 'मानस' भी कहा जाता है, इसका नाम 'राम' और 'चरित' के संयोजन से लिया गया है। शब्दार्थ से 'राम के कार्यों का समुद्र', यह हिन्दू साहित्य में सबसे महान कृतियों में से एक के रूप में उपास्य स्थान रखता है।

तुलसीदास ने अवधी में श्रामचरितमानसश की रचना करने का निर्णय इसलिए लिया कि इससे एक विशाल दर्शक समुदाय तक पहुँच हो सके। इस कारण, वे वाराणसी के संस्कृत विद्वानों से आलोचना का सामना करना पड़ा, लेकिन वे अपने मिशन में स्थिर रहे कि राम की कहानी को विद्वानों और सामान्य लोगों दोनों के लिए समझने योग्य बनाएं। उनकी दृढ़ता ने उन्हें सफलता दिलाई, और उनकी रचना ने व्यापक स्वीकृति प्राप्त की, जिससे विद्वानों और साधारण लोगों के बीच की दूरी को कम किया गया।

'रामचरितमानस' ने न केवल राम की कहानी को समझने योग्य बनाया, बल्कि इसने सांस्कृतिक परंपराओं को भी प्रेरित किया, विशेष रूप से 'रामलीला' के रूप में रचनात्मक प्रस्तुतियों को। इसे हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन के सागुण पंथ का एक महत्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है।

'रामचरितमानस' सात खंडों (पुस्तकों या अध्यायों) से मिलकर बनता है, जो पाठकों को राम के जीवन के माध्यम से ले जाता है, जिसमें गहरे दार्शनिक शिक्षाएं और नैतिक सीखें प्रस्तुत की गई हैं। प्रत्येक खंड एक आवाहन के साथ शुरू होता है, जिसमें विभिन्न देवताओं की पूजा की जाती है और आगामी कथा के लिए माहौल निर्धारित किया जाता है। गोस्वामी तुलसीदास प्रत्येक खंड को एक संकल्प से समाप्त करते हैं, जिससे राम के कार्यों की शुद्धिकरण की अहमियत को संकेत मिलता है।

इसके संगीतमय छंदों और अनवरत ज्ञान के माध्यम से, श्रामचरितमानसश आज भी दिलों और दिमागों को मोहित करता है, आने वाली पीढ़ियों के लिए आध्यात्मिक जागरूकता और नैतिक मार्गदर्शन का प्रकाशवाहक का कार्य करता है।

भगवान शिव और हनुमान की स्तुति

रामचरितमानस को पूरा करने के बाद, तुलसीदास वाराणसी लौट आए, जहां उन्होंने अपनी महाकाव्य को प्रस्तुत किया शिव और पार्वती के सम्मानित काशी विश्वनाथ मंदिर में। इस भक्ति और विनम्रता के कार्य ने तुलसीदास के ईश्वरीय आदर्श और उनके शिल्प के प्रति अडिगता को प्रकट किया। हालांकि, रामचरितमानस की यात्रा वहां समाप्त नहीं हुई, क्योंकि इसे प्रामाणिकता की जांच करने वाले संशयवादियों का सामना भी करना पड़ा।

पौराणिक कथा के अनुसार, वाराणसी में कुछ ब्राह्मण तुलसीदास की लोकभाषा में रचना पर संशय रखते थे, और उन्होंने रामचरितमानस की महत्ता का मूल्यांकन करने के लिए एक योजना बनाई। उन्होंने तुलसीदास के काम के एक प्रति को रात्रि के अंदर काशी विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह में संस्कृत ग्रंथों के स्टैक के नीचे रखा। अप्रत्याशित रूप से, जब अगले सुबह दरवाजे खोले गए, तो रामचरितमानस को उसी स्टैक के ऊपर पाया गया, जिस पर ष्सत्यम् शिवम् सुंदरम्ष लिखा था, जो शिव की स्वीकृति का प्रतीक है। इस चमत्कारपूर्ण मान्यता ने संशयवादियों को खामोश कर दिया और तुलसीदास को एक दिव्य प्रेरणा के कवि के रूप में दृढ़ता से स्थापित किया।

इस दिव्य प्रमाणीकरण के बावजूद, तुलसीदास की यात्रा में कठिनाइयाँ और परिक्षमण नहीं थीं। लगभग 1664 विक्रम संवत (1607 CE) के आसपास शारीरिक विपत्तियों का सामना करते हुए, तुलसीदास ने हनुमान बहुक की रचना करके शांति प्राप्त की। इस भक्ति के कार्य ने उनकी शारीरिक पीड़ा को न केवल कम किया, बल्कि इसने उनके ईश्वर में अडिग विश्वास का सबूत भी दिया।

हनुमान चालीसा, जिसे तुलसीदास ने अवधी में रचा है, एक प्रमुख हिंदू भक्तिगीत है जिसमें 40 छंद हैं। यह हनुमान की गुणगान करता है, जो भगवान राम के विशेष शिष्य और महाकाव्य रामायण के मुख्य पात्र हैं। परंपरा के अनुसार, हनुमान सिर्फ राम का वफादार सेवक नहीं हैं, बल्कि उनका भगवान शिव का अवतार भी माना जाता है। यह गीत हनुमान की शक्ति, साहस, बुद्धिमत्ता, ब्रह्मचर्य और राम के प्रति अडिग भक्ति की प्रशंसा करता है, जो हिंदू पौराणिक कथाओं में उनकी दिव्य गुणधर्म और महत्व को संक्षेपित करता है। हनुमान चालीसा का पाठ या जाप मिलियनों हिंदुओं के बीच एक व्यापक धार्मिक प्रथा है, जो उन्हें हनुमान की कृपा को आमंत्रित करने और उनकी संरक्षा और मार्गदर्शन के लिए उनके समय में उनके आशीर्वाद की खोज में एक शक्तिशाली साधन मानते हैं।

तुलसीदास की अंतिम रचना, श्विनयपत्रिकाश, आध्यात्मिक उथल–पुथल के समय में लिखी गई थी, क्योंकि कलियुग के प्रारंभ ने धर्म के मार्ग को अस्पष्ट करने की आशंका दिलाई। इस भावपूर्ण काव्य के 279 छंदों में, तुलसीदास ने भगवान राम से भक्ति और मार्गदर्शन के लिए प्रार्थना की, जीवन के अराजकता में शांति की खोज की। श्विनयपत्रिकाश की अंतिम छंद तुलसीदास के अटल ईश्वरीय संबंध का सबूत है, क्योंकि उन्होंने यह दावा किया कि राम ने खुद मसूदा पर हस्ताक्षर किए और उनकी प्रार्थना को मान्यता दी।

निष्कर्ष

तुलसीदास, 16वीं सदी के भारतीय कवि और संत, हिन्दू साहित्य और आध्यात्मिकता पर अविस्मरणीय प्रभाव छोड़े। भगवान राम के प्रति उनके गहरे भक्ति के लिए प्रसिद्ध, उन्होंने अवधी भाषा में दो महान कार्य रचे, श्रामचरितमानसश और श्हनुमान चालीसाश, जिससे राम की कथाएँ और उनकी शिक्षाएँ जनता के लिए पहुँचने लगीं। संस्कृत विद्वानों की आलोचना का सामना करने के बावजूद, तुलसीदास अपने मिशन में दृढ़ रहे, सांस्कृतिक ग्रंथों को सरल और व्यापक बनाने और सीखने वाले और आम लोगों के बीच की दूरी को कम करने में।

उनकी साहित्यिक प्रतिभा और आध्यात्मिक दृष्टिकोण लाखों लोगों को प्रेरित करती हैं, पीढ़ियों और स्थानीय सीमाओं को पार करती हैं। उनकी अनमोल रचनाओं के माध्यम से, तुलसीदास आज भी भक्तों के दिलों में भक्ति और ज्ञान की ज्योति जगाते हैं, प्रेम, विश्वास और दिव्य कृपा की एक विरासत छोड़ते हैं। अपने जीवन भर में, तुलसीदास ने अडिग भक्ति और विनम्रता का उदाहरण प्रस्तुत किया, उनकी कविता आने वाली पीढ़ियों के लिए आध्यात्मिक जागरूकता का एक प्रकाशक का कार्य करती है। तुलसीदास की विरासत एक कवि, दार्शनिक, और राम के भक्त के रूप में बनी रही है, जो सत्य और आध्यात्मिक खोजने वालों के लिए वैश्विक रूप से एक मार्गदर्शन प्रकाश की भूमिका निभाती है।

संदर्भ

- ऑलचिन, एफ.आर. (1966)। उत्तर भारतीय भक्ति परंपरा में तुलसीदास का स्थान। रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की पत्रिका, 98(2), 123–140।
- लैम्ब, आर. (2022)। तुलसीदास और सभी सृष्टि के सम्मान के माध्यम से स्थिरता। धर्म और स्थिरता मेंरू अंतरधार्मिक संसाधन, अंतःविषय प्रतिक्रियाएँरू स्थिरता अध्ययन और धर्म, धर्मशास्त्र, दर्शन का प्रतिच्छेदन (पृष्ठ 175–180)। चौमरू स्प्रिंगर इंटरनेशनल पब्लिशिंग।
- शर्मा, एम., कुमारी, एस., और चौधरी, एम.एम. (2022)। तुलसीदास द्वारा लोकप्रिय कल्पना के राम का पुनर्निर्माण। बायन कॉलेज इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, 2(2), 91–96।
- झा, एन.के. (2017)। तुलसीदास का राजनीतिक दर्शन। भारतीय राजनीतिक विचार, 103.
- लुटगेंडोर्फ, पी. (1991). एक पाठ का जीवनरू तुलसीदास के रामचरितमानस का प्रदर्शन। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।
- चंदोला, ए. सी. (1968)। तुलसीदास पर असहमति। महफिल, 5(1ध्2), 99–103।
- बंगा, आई. (2004)। आधुनिक भारत में पाठ्य संचरण की गतिशीलतारू तुलसीदास की कवितावली। दक्षिण एशिया, अफ्रीका और मध्य पूर्व का तुलनात्मक अध्ययन, 24(2), 33–44।
- हेस, एल. (1988)। कवि, लोग और पश्चिमी विद्वान– उत्तर भारत में सामाजिक मूल्यों पर एक पवित्र नाटक और पाठ का प्रभाव। थिएटर जर्नल, 40(2), 236–253।
- फ्लूकेगर, जे. बी. (1993)। एक पाठ का जीवनरू तुलसीदास के ''रामचरितमानस'' का प्रदर्शन।
- पॉवेल्स, एच. (2010)। भक्तों के दुश्मन कौन हैं? कबीर, रामानंदी, तुलसीदास और हरिराम व्यास से ष्शाक्तोंष और ष्अन्यष के बारे में गवाही। जर्नल ऑफ द अमेरिकन ओरिएंटल सोसाइटी, 130(4), 509।
- वाधवानिया, एम. (2023)। भारतीयता का अनावरणरू भारतीय साहित्य में कवियों की नजर से हिंदू धर्म की खोज। विद्या–गुजरात विश्वविद्यालय की एक पत्रिका, 2(2), 69–75।
- बेनीवाल, ए.एस. (2019)। कहानी में सिद्धांत– सिद्धांत कक्षा में तुलसीदास के श्री–रामचरितमानस की शैक्षणिक संभावनाएँ। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय शोध पत्रिका आर्ट्स, 18(1), 1–19.
- लुटगेंडोर्फ, पी. (2001). तुलसीदास के रामचरितमानस से पुस्तक पाँचरू सुंदर कांडरू परिचय. भारतीय साहित्य, 45(3 (203), 143–148.
- ब्रायंट, के. ई. (2018). बाल–देवता को कविताएँ– सूरदास की कविता में संरचनाएँ और रणनीतियाँ. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस.
- कल्पगम, यू. 2000. औपनिवेशिक राज्य और सांख्यिकीय ज्ञान. मानव विज्ञान का इतिहास 13, संख्या 2रू 37–55.
- ओरसिनी, फ्रांसेस्का, एट.अल. 2005. एक समीक्षा संगोष्ठी: इतिहास में साहित्यिक संस्कृतियाँ. भारतीय आर्थिक सामाजिक इतिहास समीक्षा 42रू 377–408.